Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चन्देरी रियासत का साम्राज्यवादी दौर देवीसिंह बुंदेला (1654–1663)

डॉ.अर्पिता तिवारी*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय माधव महाविद्यालय, चंदेरी, जिला अशोकनगर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में विंध्याचल की सुरम्य में रमणीय पर्वत श्रृंखलाओं की चंद्र गिरी पहाड़ी की ऊंची चोटियों से रक्षित बेतवा और उर्वशी सरिताओं की सुरम्य में घाटी में उपस्थित चंदेरी 78.6पूर्वी देशांतर एवं 24.8अक्षांश पर समुद्र सतह से लगभग 1070 फीट ऊंचाई पर स्थित है।चंदेरी एक ऐतिहासिक नगरी होने के साथ–साथ अपने अंतर ह्रदय में प्रागैतिहासिक के कई अवशेष समेटे हुए हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व चंदेरी क्षेत्र अवन्ति दर्शाण एवं चेदि जनपदों से आवृत था,प्राचीन काल में इस नगर का वैभव अपनी चरम सीमा पर था। मालवा और दिल्ली का प्रवेश द्वार माने जाने वाले इस नगर का महत्व प्रत्येक काल में रहा है। वर्तमान चंदेरी नगर की स्थापना 10–11वीं शताब्दी के मध्य प्रतिहार शासकों द्वारा की गई थी।चंदेरी गुलाम वंश, तुगलक वंश के आधिपत्य में रही 1401 में दिलावर खान गोरी ने मालवा में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली,फलस्वरूप चंदेरी मालवा के सुल्तानों के आधिपत्य में रही। 1528 को बाबर ने मैदनीराय पर विजय प्राप्त की इस प्रकार चंदेरी मुगल अधिपत्य में चली गई। जहांगीर द्वारा बुंदेला शासक रामशाह को चंदेरी का शासक नियुक्त किया गया, यही से चंदेरी में बुन्देला वंश का सूत्रपात हुआ। रामशाह के पश्चात क्रमश: संग्राम शाह, भारत शाह, देवी सिंह, दुर्ग सिंह,मान सिंह,अनिरुद्ध सिंह, रामचंद्र,प्रजापाल मौदप्रहलाद एवं अंतिम शासक मर्दन सिंह हुए। कालांतर में चंदेरी सिंधिया और ब्रिटिश आधिपत्य में रही। देवी सिंह बुंदेला चंदेरी कि बुंदेला शासकों में सबसे महत्वपूर्ण रहे। जिनके सिंहासन पर बैठते ही चंदेरी साम्राज्य ने अभूतपूर्व उन्नति की। प्रस्तुत शोध पत्र में देवी सिंह बुंदेला के व्यक्तित्व ,कृतित्व एवं उपलब्धियों का ऐतिहासिक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के स्रोतों की सहायता ली गई है एवं विषय से संबंधित विद्वानों का साक्षात्कार किया गया है।

शब्द कुंजी –देवी सिंह,चंदेरी, बुंदेला, मुगल, जुझारसिंह।

प्रस्तावना – देवीसिंह बुँदेला, भारत शाह की मृत्योंपरांत 1654 ई. में चन्देरी के सिंहासन पर विराजमन हुए। देवीसिंह के सिंहासन पर बैठते ही चन्देरी की किस्मत का सितारा आसमान को छूने लगा। इनके शासनकाल में चन्देरी राज्य विकास के पथ पर अग्रसर हुआ। देवीसिंह बुन्देला के शासनकाल में राज्य दूर–दूर तक फैल चुका था। चन्देरी सरकार के नाम से प्रसिद्ध यह क्षेत्र 17 परगनों में विभक्त था। राज्य की आय 22 लाख प्रतिवर्ष थी। चन्देरी सरकार के अंतर्गत आने वाले परगने भेलसा, बासौदा, उदयपुरा, मुँगावली, हनुमंतगढ़ (ईसागढ़) मल्हारगढ़, सेहराई, कंजिया, खैरोदा, सिरौज, बेरसिया, सेवास, भोरोसा, तालबेहट, ललितपुर, रोड़ा एवं अगरई प्रमुख थे। महाराज देवीसिंह ने चन्देरी ही नहीं अपितु सारे क्षेत्र में प्रगति के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए।

महाराज देवीसिंह गद्दी पर बैठे और दिल्ली से राजगी का खिलत आया। ऐसे तो ये राज्य का कार्य अपने पिता और प्रपिता संग्रामशाह के समय से करते थे और जो फरमान शाही आते थे, उसमें इनको राजा लिखा जाता था।[1] यही कारण है कि उनके राज्य काल के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। झाँसी गजेटियर, भगवानदास गुप्त, काशी त्रिपाठी आदि विद्वानों में देवीसिंह के राज्यकाल को लेकर मतभेद है, किन्तु पुरातात्विक साक्ष्यों एवं डण्ठ गर्दे पुरातत्विद, चन्देरी राजगान के अनुसार देवीसिंह का राज्यकाल 1654–1663 ई. रहा है। यह देवीसिंह की छत्री पर लगे शिलालेख से प्रमाणित होता है, अत: अपने पिता व प्रपिता के राज्यकाल से ही उन्होंने राज्य संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शाहजहाँ ने इसे 2000 हजारी का मनसल और राजा की पदवी दी।[2] ओरछा नरेष वीरसिंह देव के पश्चात् उनका ज्येष्ठ पुत्र जुझारसिंह गद्दी पर बैठा, इसने शाहजहाँ के खिलाफ विद्रोह कर दिया। शाहजहाँ के आदेश पर खाँने जहाँ, फिरोज जंग और खान–इ–दौरान के अधीन तीन सैनाये विद्रोह का दमन करने के लिए भेजी। मुगल सेना के इस वेगपूर्ण आक्रमण को रोकना जुझारसिंह के लिए संभव न था। मुगलों ने 4 अक्टूबर 1635 ई. को बुँदेलो की राजधानी ओरछा पर अधिकार कर लिया।[3]

जुझारसिंह के इस विद्रोह को दबाने में चंदेरी के देवीसिंह, दतिया के भगवानराय और पहाड़सिंह आदि बुँदेलों ने मुगलों को सक्रिय योगदान दिया था। देवीसिंह वीरसिंह देव के बड़े भाई रामशाह का पौत्र था और भगवानराय तथा पहाड़सिंह जुझारसिंह के ही भाई थे। इस समय बुँदेलों की आपसी फूट, पारस्परिक स्पर्धा, ईर्ष्या और द्वेष इतने बढ़ गये थे, कि इन सारे निकटस्थ कौटुम्बिक संबंधों को भी भुलाकर वे एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो गये थे। देवीसिंह ने अंत में अपने प्रपितामह के राज्य ओरछा पर पुन: अपनी सत्ता स्थापित की।

देवीसिंह, शाहजहाँ के शासनकाल के 8 वें वर्ष खाने दौरा के साथ जुझारसिंह को दण्ड देने पर नियुक्त होकर डंका मिलने से सम्मानित हुआ। ओरछा विजय उपरांत, वहाँ का राज्य देवीसिंह के नाम हो गया था, इसलिए यह वही रह गए और बुन्देला जाति की सरदारी उसे मिली।[4] 1634–36 ई.

तक ओरछा पर शासन किया। इस समय का एक शिला लेख बल्देवगढ़ के ग्वाल सागर के मध्य मढ़िया में लगा हुआ है। सम्राट शाहजहाँ ने उनसे प्रसन्न होकर, उन्हें चन्देरी के दक्षिण पूर्व के गदरौला, खिमलासा, इटावा, मालथौन, राहतगढ़, बासौदा, बसिया एवं सिरौंज के परिक्षेत्र दे दिये थे।[5]

इस समय बुँदेलों के केबल दो राज्य चन्देरी और दतिया रह गए थे। चन्देरी के देवीसिंह को बादशाह ने सागर जिले तरफ बहुत लंबा चौड़ा राज्य दे रखा था, जिसका कुछ भाग इस समय सागर जिले में शामिल है। दतिया के राजा भगवान राव बादशाह के विश्वासी मित्र थे। इसी समय जप्त हुए ओरछा राज्य के उदयाजीत के वंशज चंपत राय ने भुमयावट करके मुगल बस्तियों को उजाड़ना तथा छोटी मोटी शाही सैनाओं को परेषान करना आरंभ कर दिया था।[6]

जुझारसिंह की मृत्यु के बाद ओरछा का राज्य लगभग दो वर्ष तक देवीसिंह के अधिकार में रहा। परंतु स्थानीय जनता तथा जुझारसिंह के अन्य बुँढेला अनुयाइयां के सक्रिय विरोध के कारण विवश होकर अंत में देवीसिंह ओरछा छोड़कर वापिस चंदेरी लौट गया। तब जुझारसिंह के राज्य को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया और वहाँ के शासन के लिए शाही कर्मचारी नियुक्त कर दिये गये।[7]

शाहजहाँ के शासनकाल के 9वें वर्ष ओरछा प्रांत का प्रबंध ठीक करके बादशाह के दरबार में पहुँचा और वहाँ से सैयद खाने जहाँ बारह (जो बीजापुर पर अधिकार करने के लिए भेजा गया था) के यहाँ भेजा गया। वहाँ इसने अच्छा काम दिखलाया। 10 वें वर्ष में खानेदौरा की प्रार्थना पर इन्हें झंडा और डंका दोनों मिल गया। 11वें वर्ष शाहजादा मुरारबख्श के साथ बलख और बदख्शॉ विजय करने पर नियुक्त हुआ। इस यात्रा में भी द्वितीय बार अच्छा कार्य किया और अलअमानों से कई बार अच्छी लड़ाइयाँ हुई।[8]

शाहजहाँ के शासन के 22 वें वर्ष जब दुर्ग कंधार कजिलवाशों के अधिकार में चला गया था यह भी दूसरी बार औरंगजेब के साथ उस दुर्ग की चढ़ाई पर गए और कजिलवाशों के साथ युद्ध में दृढ़ता से डटकर अच्छी वीरता दिखलाई।[9] देवीसिंह के चन्देरी पर सिंहसानारूढ़ होने के पश्चात् हुसेन खॉ राहतगढ़ का जमीदार बागी हो गया। उसने राहतगढ़ के किले पर अपना अधिकार कर लिया। देवीसिंह को हुसेन खॉ के विरूद्ध आक्रमण के लिये फरमान आया। उन्होंने राहतगढ़ पर चढ़ाइ की, हुसेन खॉ भाग गया और उसका लड़का पकड़ा गया जिसे उन्होंने बादशाह के पास भेज दिया।[10]

शाहजहाँ के शासनकाल के 31वें वर्ष दरबार बुलाये जॉने पर महाराज जसवंत सिंह के साथ देवीसिंह नियत हुआ। युद्ध के दिन महाराज ने इसे फौजी भंडार के रक्षार्थ नियत किया था और युद्ध में जब सुल्तान मुरार बख्श ने बादशाही भंडार पर धावा बोला इससे बड़ी गड़बड़ मची तब यह दूरदर्शिता से शहजादे की शरण में चला गया और उसकी मध्यस्थता से औरंगजेब की सेवा में पहुँचा। शाहजादे के कैद होने पर इसे खिलअत मिली। खानेदौरों सैयद महमूद के प्रार्थना पत्र से इसकी कर्मशीलता का पता लग चुका था, इसलिए इसका मनसब बढ़ाकर 2500 सवार कर दिया था।[11]

बीजापुर के मुगल अभियान और शाहजादा मुराद के अंतर्गत बल्ख, बदख्शॉ की चढ़ाई (1646-47 ई.) में देवीसिंह ने उल्लेखनीय वीरता दिखाई। कंधार के जीतने के लिए किये गये औरंगजेब के द्वितीय और दारा के तृतीय अभियानों (1652-53) में भी उसने भाग लिया। वहाँ से लौटने पर उसे 1654-55 ई. भेलसा का फौजदार बना दिया गया, फिर वह दक्षिण में औरंगजेब के पास रहा, किंतु तुरंत ही शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार युद्ध की सम्भावना बढ़ने पर उसे दक्षिण से वापस बुला लिया गया। इसी समय औरंगजेब और मुराद की सम्मिलित सेनायें उत्तर की ओर बढ़ रही थी। अतएव देवीसिंह को रोकने के लिए जसवंत सिंह राठौर के साथ कर दिया।[12]

औरंगजेब ने सम्राट बनने पर उसे भेलसा का फौजदार बना दिया। इसी साल बुंदेलखण्ड और मालवा की सीमा पर चम्पतराय की कार्यवाहियाँ जोर पकड़ रही थी, औरंगजेब तब दाराशिकोह और शुजा का दमन करने में व्यस्त था, अत: वह चंपतराय के विद्रोह की ओर विशेष ध्यान न दे सका। फिर भी उसने ओरछा के इंद्रमणि तथा महासिंह भदौरिया के साथ शुभकरण बुँदेला को चंपतराय के विरूद्ध भेजा। उन्हें कुछ साधारण सी सफलता प्राप्त हुई, पर उससे चंपतराय तनिक भी विचलित नहीं हुए।

उधर जब अपने विरोधी भाइयों से छुटकारा पाकर औरंगजेब ने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली, तब अपने राज्य काल के चौथे वर्ष (20 अप्रैल 1661-9 अप्रैल 1662) में उसने मालवा तथा बुँदेलखण्ड के राजाओं और जागीदारों की सहायता चंपतराय के विद्रोह दबाने के लिये चंदेरी के देवीसिंह बुँदेला को नियुक्त किया। चंपतराय की स्थिति अब बहुत संकटमय हो गयी थी। उनके अपने ही स्वजनों ने उनके विरूद्ध तलवार उठा ली थी। मुगलों और बुँदेलों की सम्मिलित शक्ति का अधिक समय तक सामना करना चंपतराय के लिये संभव न था। चंपतराय की पराजय हुई।[13]

चंपतराय के पुत्र छत्रसाल ने देवीसिंह से सहायता मांगी, इन्होंने सहायता देने से इनकार किया परन्तु ये कहा कि- तुम भी हमारे भाई हो हमारे राज्य के किसी गाँव से फायदा उठा लो। छत्रसाल ने देलवारे वाले ठाकुरों की सलाह से ललितपुर लूट लिया।[14]

महाराज देवीसिंह बुंदेला कलम तथा तलवार दोनों के धनी थे। महाराज हिन्दी, संस्कृत के विद्वान थे। इनके पास एक विशाल ग्रंथालय था। आयुर्वेद एवं ज्योतिष के पंडित थे, इन्होंने आयुर्वेद विलास तथा देवीसिंह निदान नामक ग्रंथों की रचना की है। इन्होंनें अनेक ग्रंथों की रचना की। देवीसिंह बुन्देला के संरक्षण में गोस्वामी षिवानंद भट्ट ने सत्रहवी सदी के अंतिम अर्द्धांश में वृहत तंत्रिका विश्वकोश और सिंह सिद्धांत सिंधु की संस्कृत में रचना की थी। संस्कृत के विद्वान कवि पंडित मोहन भट्ट ने अपने कामसवध महाकाव्य की रचना भी इसी काल में की थी। देवीसिंह बुन्देला द्वारा स्वरचित वैद्यक ग्रंथ सिंह सुधानिधि भी उपलब्ध हुआ है। यह पूर्ण कृति नहीं है। इसमें शरीर, निदान और रसायन तंत्र की जॉनकारी दी गई है। देवीसिंह के काल में रचित उपरोक्त संस्कृत ग्रंथों से पता चलता है कि उसकी तंत्रशास्त्र, काव्य और वैद्यक शास्त्र में अत्याधिक रूचि थी।[15]

देवीसिंह धर्मपरायण राजा थे, तवारीख हाल राजगान चन्देरी में लिखा है कि-एक दिन यह भोजन करके दिन के समय सो रहे थे और महारानी इनके पेर के तलवे पर हाथ फेर रही थी। पास ही एक ब्राह्मण की लड़की जो 8-9 वर्ष की थी बैठी थी। महारानी उस लड़की को छोड़कर भोजन के लिए चली गई। कुछ देर के बाद वो लड़की उठी और महारानी हाथ तलवों पर फेर रही थी वैसे ही राजा के तलवों पर हाथ फेरने लगी। राजा की आँख खुल गई और उस लड़की से पूछा की तू कौन की लड़की है, इतने में महारानी आ गई। तब महाराज ने कहा कि लड़की के हाथ फेरने से मेरे तलवे जलने लगे, मालूम होता कि ब्राह्मण की लड़की है। इतना कहकर राजा बाहर चले आये और पंडितों को बुलकार पूछा कि ब्राह्मण की लड़की अगर अनजॉने से पैर छूले तो क्या प्रायश्चित करना चाहिये। पंडितो ने कहा कि यदि ऐसा हो तो उसे सात तवे लोहे के गर्म करके उन पर से चले। राजा ने पंडितों को विदा कर एक दूसरे

कमरे में चले गये और सात तवे गर्म कराकर नंगे पैर उन पर से चले, आँच की गरमी से बेहोश होकर गिर पड़ें। कुछ महीने तक इलाज होता रहा और अच्छे हो गये।[16]

कुछ दिनों बाद शाही हुकूम से लाहोर गये, रास्ते में लांगड़े के पास तिगरा कङ्गोर भाउनी के राजा से प्रीत हो गई राजा ने अपनी बेटी जराव कुँअर का विवाह इनके साथ कर दिया। इन्हीं रानी से महाराज दुर्गसिंह का जन्म हुआ। ये रानी जल्पा देवी की बड़ी भक्त थी, जब ये वहाँ से आई तो मूर्ति साथ में लाई थी। अब ये मूर्ति ललितपुर के चौबे के बाग में स्थापित है। महाराज देवीसिंह ने एक तोप ढलवाइ ये तोप सिंधिया का कर्नल जॉन बेप्टिस ले गया। देवीसिंह बुन्देला के दो पुत्र थे। बड़े पुत्र दुर्गसिंह को चन्देरी का राज्य एवं छोटे पुत्र शाहजू बुन्देला को कंजिया की जागीर दी गई। 1663 ई. इनका स्वर्गवास हो गया। इनकी छत्री चन्देरी के परमेश्वर तालाब के निकट ही बनी हुई है।[17] भगवान दास गुप्ता के अनुसार देवीसिंह की मृत्यु 26 जनवरी 1682 को हुयी किन्तु इनकी छत्री के शिलालेख के अनुसार इनका शासन 1663 ई. तक रहा।

इनके शासनकाल में चन्देरी में कई महत्वपूर्ण निर्माण कार्य हुए जो हिन्दू-मुस्लिम एकता की जीती जागती मिसाल है। चन्देरी के पठानी मुहल्ले में महाराज देवीसिंह ने एक मस्जिद का निर्माण करवाया सिंहपुर ग्राम, सिंहपुर महल, बाब की बावड़ी, तालवेहट में विन्द्रवान उद्यान आदि का निर्माण कार्य कराया। 'औरंगाबाद के बाहर पश्चिम और उत्तर की ओर एक पुरा इनके नाम पर बसा है।'[18]

चंदेरी का बुंदेला राज्य का वट वृक्ष जिसकी स्थापना रामशाह बुंदेला ने की थी, उसकी कई शाखाएं प्रस्फुटित हुई जो समय की अविरल धारा के साथ पुष्पित एवं पल्लवित होती रही। महाराज देवी सिंह ने चंदेरी ही नहीं अपितु उनके अधीनस्थ समस्त क्षेत्र की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए इनके शासनकाल में राज्य विस्तृत होने के साथ-साथ आर्थिक सामाजिक एवं स्थापत्य रूप से सुदृढ था। देवी सिंह बुंदेला के कालखंड को चंदेरी बुंदेला साम्राज्य का 'स्वर्ण' युग कहें तो सर्वथा उचित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कुन्दल लाल भारतीय द्वारा प्राप्त, हस्तलिखित पुस्तक, 1925, पृ. 18
2. मआसरूल-उमरा, भाग 1, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ. 116
3. डॉ. गुप्त, भगवानदास, बुँदेलखंड केसरी महाराजा छत्रसाल बुँदेला, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी भोपाल, 2004, पृ. 5-6
4. मआसरूल - उमरा, पूर्वोक्त पृ. 116
5. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, 'बुन्देलखण्ड का बृहद इतिहास', बाबूलाल जैन फाल्गुन महावीर प्रेस वाराणसी, 1991 पृ. 76-77
6. सिंह, दीवान प्रतिपाल, 'बुन्देलखण्ड का इतिहास' आठवाँ भाग, जिला सहकारी मुख्यालय छतरपुर पृ. 150
7. डॉ. गुप्त, भगवानदास, 'बुँदेलखण्ड केसरी महाराजा छत्रसाल बुँदेला' पूर्वोक्त पृ.7
8. मआसरूल- उमरा, पूर्वोक्त पृ. 116-117
9. वही पृ. 117
10. कुन्दल लाल भारतीय द्वारा प्राप्त, हस्तलिखित पुस्तक, 1925 पृ. 19
11. गुप्त, भगवानदास, मुगलों के अंतर्गत बुन्देलखण्ड का सामाजिक अर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास, (1531-1731), हिन्दी बुक सेन्टर नई दिल्ली, वर्ष 1997, पृ. 20-21
12. मआसरूल-उमरा, पूर्वोक्त पृ. 117
13. डॉ. गुप्त, भगवानदास, 'बुँदेलखण्ड केसरी महाराजा 'छत्रसाल बुँदेला', पूर्वोक्त पृ. 10-11
14. कुन्दल लाल भारतीय द्वारा प्राप्त, हस्तलिखित पुस्तक पृ. 20
15. श्री एस.एल. कटारे का इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की 1952 की प्रोसीडिंग्स में 'देवीसिंह बुँदेला ऑफ चन्देरी: ए रायल पेट्रन ऑफ संस्कृत ऑयर्स-फ्रेश ऑन हिज डेट ऐण्ड संस्कृत ऑथरशिप' शीर्षक लेख पृ. 385-871।
16. कुन्दल लाल भारतीय द्वारा प्राप्त, हस्तलिखित पुस्तक, 1925, पृ. 20-21
17. वहीं पृ. 21
18. मआसरूल-उमरा पूर्वोक्त पृ. 117

****